

परमेश्वर की सर्वव्यापकता, सर्वज्ञता और सर्वशक्तिशालिता

रेमण्ड सी. केलसी

“क्या तू ईश्वर का गूढ़ भेद पा सकता है ? और क्या तू सर्वशक्तिमान का मर्म पूरी रीति से जांच सकता है ? वह आकाश सा ऊंचा है; तू क्या कर सकता है ? वह अधोलोक से गहिरा है, तू कहां समझ सकता है ? उसकी माप पृथ्वी से भी लम्बी है और समुद्र से भी चौड़ी है” (अय्यूब 11:7-9)।

परमेश्वर को जानकर हमारे दिमाग अनन्तकाल तक भर जाएंगे। निश्चय ही, हम इस विषय के समाप्त होने की आशा नहीं कर सकते। नाशवान मनुष्य के लिए परमेश्वर को समझना सम्भव नहीं है। ऐसा नहीं है कि उसने मनुष्य से अपने आपको छुपाने की कोशिश की है। इसके विपरीत, वह तो अपने आपको उस पर प्रकट करने और उसे अपना ज्ञान देने की प्रतीक्षा में रहता है। परमेश्वर को समझने में हमारी असफलता इसलिए नहीं है कि वह हम पर अपने आपको प्रकट नहीं करना चाहता, बल्कि हमारी अपनी ही सीमाएं हैं। परमेश्वर तो अपने आपको मनुष्य पर प्रकट करने के लिए नीचे उतर आया है, इसलिए हम उसे निश्चित सीमा तक जान सकते हैं। परमेश्वर को जानने का अर्थ है अनन्त जीवन पाना (यूहन्ना 17:3)। हमारा उद्देश्य यही होना चाहिए कि हमने परमेश्वर के साथ और बेहतर पहचान बनानी है, बेशक उसकी सम्पूर्णताओं को पूरी तरह से समझना असम्भव है।

कहते हैं कि रोलैण्ड हिल नामक एक प्रचारक एक बार अपने सुनने वालों को परमेश्वर के प्रेम के बारे में समझाने का यत्न कर रहे थे। अचानक, रुककर उन्होंने अपनी आंखें स्वर्ग की ओर उठाकर कहा: “मैं इस बड़े विषय को नहीं समझ सकता, फिर भी मुझे नहीं लगता कि समुद्र की छोटी से छोटी मछली ने भी कभी समुद्र के विशाल होने की शिकायत की होगी। मैं भी नहीं करता। अपनी कमजोर शक्ति के साथ मैं आनन्द से एक ऐसे विषय में डुबकी लगा सकता हूँ जिसकी अमापनीयता को मैं कभी समझ नहीं पाऊंगा।” यह भावना बिल्कुल वैसी ही है जो पौलुस को अपने अद्भुत स्तुतिगानों में कहने को मिली थी:

“आहा! परमेश्वर का धन और बुद्धि और ज्ञान क्या ही गंभीर हैं! उसके विचार कैसे अथाह, और उसके मार्ग कैसे अगम हैं!” (रोमियों 11:33)।

परमेश्वर की असीमितता का अध्ययन करने के लिए हमारे दिमाग में भी यही विचार होना चाहिए। “हमारा प्रभु महान और अति सामर्थी है; उसकी बुद्धि अपरम्पार है” (भजन संहिता 147:5)। “अपरम्पार” शब्द में किसी भी प्रकार की सीमा न होने का संदेश मिलता है। परमेश्वर के प्रकार (कम्पास) से बढ़कर कुछ भी नहीं है। वह अमापनीय है अर्थात् इसे मापा नहीं जा सकता उसकी महानता की सीमाओं की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

परमेश्वर के प्रेम, दया तथा न्याय आदि कुछ गुण मानवीय जीवों में पाए जाते हैं, जबकि उसके दूसरे गुणों की व्याख्या भी नहीं की जा सकती। उसके कुछ निराकार गुणों के लिए, मनुष्य के दिमाग में कोई भी बात नहीं है, और उन्हें निश्चित करने के लिए हमारे व्याख्यात्मक शब्द अपर्याप्त हैं। हमें ऐसी भाषा का जिसे हम समझ सकते हैं और ऐसे उदाहरणों का जो हमें मिल सकते हैं, इस्तेमाल करना चाहिए, परन्तु इसके साथ ही अपने अपर्याप्त होने का भी स्मरण रखना चाहिए।

सर्वव्यापकता

आइए पहले उस गुण पर ध्यान दें जिसे हम “सर्वव्यापकता” कहते हैं। यह शब्द पवित्र शास्त्र में नहीं मिलता है, परन्तु सम्पूर्ण बाइबल में यह तथ्य सिखाया और पहले से माना जाता है कि परमेश्वर हर जगह है। प्रकाशन का कोई भी विचार परमेश्वर के सर्वव्यापक होने की बात से अधिक कठिन नहीं है। उसे समय या स्थान की धारणाओं से सीमित नहीं किया जाता।

हमें अस्तित्व की दो इकाइयों अर्थात् परमेश्वर और सृष्टि के बारे में ज्ञान है। इसमें परमेश्वर और वह जो परमेश्वर नहीं है, सब शामिल है। सर्वव्यापकता का अर्थ है कि परमेश्वर, अर्थात् एक इकाई दूसरी इकाई अर्थात् सृष्टि के सभी भागों में मिलकर इसे भर देती है। परमेश्वर हर जगह है। इसका अर्थ यह नहीं कि हर जगह उसका एक भाग है, बल्कि इसका अर्थ यह है कि उसकी सम्पूर्णता हर जगह है। पौलुस ने अथेने, अरियुपगुस में अपने प्रवचन में ऐलान किया था कि परमेश्वर “हम में से किसी से दूर नहीं” (प्रेरितों 17:27)। वह पृथ्वी के दूसरी ओर किसी व्यक्ति के पास इस समय उतना ही निकट है जितना हमारे। परमेश्वर को अपनी पसन्द का कार्य करने या प्रार्थना का उत्तर देने के लिए एक जगह से दूसरी जगह जाने की आवश्यकता नहीं पड़ती है। वह सारी सृष्टि में निवास करता है। पूरे संसार में ऐसा कोई स्थान नहीं है जहां आप परमेश्वर को किसी क्षण भी अपने से दूर पायें। परमेश्वर के निकट आने के लिए तीर्थ यात्रा की नहीं, बल्कि पश्चात्ताप करने, विनम्र होने और आज्ञा मानने की आवश्यकता है। उसके पास आने का अर्थ है उसके जैसा होना; इसके विपरीत, उससे दूर होने का अर्थ है उसके जैसा न होना।

आप पूछ सकते हैं, “क्या यह सत्य नहीं है कि परमेश्वर तो स्वर्ग में है?” हां, परन्तु वह केवल वहां ही नहीं है। “यहोवा की यह वाणी है, क्या कोई ऐसे गुप्त स्थानों में छुप

सकता है कि मैं उसे न देख सकूँ? क्या स्वर्ग और पृथ्वी दोनों मुझ से परिपूर्ण नहीं हैं?’ (यिर्मयाह 23:24)। सुलैमान ने कहा था, “स्वर्ग में वरन सबसे ऊंचे स्वर्ग में भी तू नहीं समाता, फिर मेरे बनाए हुए इस भवन में क्योंकर समाएगा!” (1 राजा 8:27)। यीशु ने भी समझाया था कि परमेश्वर आत्मा है इसलिए वह किसी एक स्थान से बन्धा हुआ नहीं है (यूहन्ना 4:24)। बहुत से लोगों को लगता है कि परमेश्वर पृथ्वी से बहुत दूर आकाश में रहता है? परन्तु परमेश्वर तो हर जगह है और हर जगह उसे पाया जा सकता है। कहते हैं कि परमेश्वर एक ऐसा चक्र है जिसका केन्द्र तो हर जगह है और जिसका घेरा कहीं नहीं है।

परमेश्वर और सृष्टि में सम्बन्ध बनाने के लिए “सर्वव्यापकता” और “श्रेष्ठता” दो शब्दों का इस्तेमाल हुआ है। इस विचार को ध्यान में रखते हुए अस्तित्व की दो इकाइयाँ, परमेश्वर तथा सृष्टि (अर्थात् परमेश्वर और जो परमेश्वर नहीं है) मिलती हैं। “श्रेष्ठता” का अर्थ है कि परमेश्वर दूसरी किसी भी इकाई से श्रेष्ठ है अर्थात् वह संसार से बड़ा है और इससे ऊपर है। यद्यपि वह संसार से श्रेष्ठ है, फिर भी वह इसमें रहता है और इसमें व्याप्त है, प्रेम से तथा इसमें काम करने से इसे अपने निकट खींचता है। “सर्वव्यापकता” का अर्थ यही है। परमेश्वर अपने संसार में दूर रहकर कार्य नहीं करता है।

सर्वव्यापकता में परमेश्वर के स्थान के साथ-साथ समय में निवास करने का विचार भी शामिल है। यशायाह ने परमेश्वर को “महान और उत्तम और सदैव स्थिर” (यशायाह 57:15) रहने वाला बताया है। भजन लिखने वाले ने उसे “पहाड़ों के उत्पन्न होने से पहले” अस्तित्व में बताया, और कहा कि, “अनादिकाल से अनन्तकाल तक तू ही ईश्वर है” (भजन संहिता 90:2)। समय के सम्बन्ध में इससे परमेश्वर की असीमितता का पता चलता है। वह अनन्तकाल में वास करता है! वह समय के उस काल में वास करता है जिसे हम भूत, भविष्य और वर्तमान के रूप में जानते हैं।

सर्वज्ञता

परमेश्वर की सर्वव्यापकता से सर्वज्ञता अर्थात् सम्पूर्ण ज्ञान का तथ्य जुड़ा हुआ है। सर्वव्यापकता का अर्थ है सर्वज्ञता; सर्वज्ञता को हम सर्वव्यापकता भी कह सकते हैं। परमेश्वर सबके लिए विद्यमान है और वह किसी से भी दूर नहीं है। इसलिए वह अपने पूरे ज्ञान की सामर्थ्य के साथ विद्यमान है। उसका सम्पूर्ण मन अपनी उपस्थिति में होने वाले को बिना जाने विद्यमान नहीं हो सकता। अन्य शब्दों में, परमेश्वर सब कुछ जाने बिना सर्वव्यापक नहीं हो सकता। भजन 139 में लेखक परमेश्वर के दोनों गुणों अर्थात् उसकी सर्वव्यापकता और सर्वज्ञता को भक्तिपूर्ण भय से मना रहा था। भजन लिखने वाले द्वारा दिया गया विचार यह है कि परमेश्वर इसलिए सब कुछ जानता है क्योंकि वह सब जगह विद्यमान है। वह अपने संसार तथा अनन्तकाल में हर जगह है। यदि परमेश्वर के ज्ञान से कोई भी नहीं बच सकता तो यह इसलिए है कि वह उसकी उपस्थिति से भाग नहीं सकता। अस्तित्व की दो इकाइयों में से एक, अर्थात् परमेश्वर दूसरी इकाई अर्थात् संसार का सम्पूर्ण ज्ञान रखता है। इसके अतिरिक्त, परमेश्वर अपने बारे में भी पूरा ज्ञान रखता है।

सम्पूर्ण मानवीय ज्ञान अधूरा है। हम किसी भी बात को पूरी तरह नहीं समझ पाते, चाहे वह छोटी से छोटी ही हो और जिससे हम पूरी तरह से परिचित होते हैं, क्योंकि हमें इस बात की पूरी समझ नहीं है कि उस वस्तु का सम्बन्ध किस से है। इसलिए, परमेश्वर की सर्वज्ञता को समझने में हमारा अनुभव हमें थोड़ी सी सहायता करता है। हमारे लिए सारे ज्ञान को पाना सम्भव नहीं है। हमारा सारा ज्ञान परमेश्वर के सामने अज्ञानता तथा मूर्खता ही है। अब तक के सबसे बुद्धिमान लोगों का ज्ञान जोड़ने पर भी उस सर्वज्ञ अर्थात् परमेश्वर के ज्ञान के बराबर नहीं हो सकता। सर्वज्ञता का अर्थ है कि भूत, वर्तमान तथा भविष्य सबका एक ही समय ज्ञान होना। “संसार के आरम्भ से परमेश्वर अपने सभी कामों को जानता है” (प्रेरितों 15:18)। परमेश्वर का ज्ञान कितना व्यापक है! पतरस ने कहा, “हे प्रभु, तू तो सब कुछ जानता है” (यूहन्ना 21:17)। अय्यूब ने कहा था, “वह तो पृथ्वी की छोर तक ताकता रहता है, और सारे आकाशमण्डल के तले देखता भालता है” (अय्यूब 28:24)। सितारों की बात करते हुए यशायाह ने प्रकट किया कि, “वह इन गणों को गिन गिन कर निकालता, उन सबको नाम ले लेकर बुलाता है” (यशायाह 40:26)। परमेश्वर इस सृष्टि की हर बात को जानता है।

हमारा परमेश्वर मनुष्य से सम्बन्धित सभी बातों को जानता है। वह न केवल उन बातों को ही जानता है जो भूत में घटित हो चुकी हैं, बल्कि उसका ज्ञान भावी किसी भी घटना के सम्बन्ध में भी वैसा ही है। यीशु ने कहा था कि यदि उसकी पीढ़ी में किए जाने वाले आश्चर्यकर्म सूर और सैदा में किए जाते तो वहां के लोग मन फिरा लेते (मत्ती 11:21)। परमेश्वर जानता है कि मनुष्य के भीतर क्या है:

यहोवा की आंखें सब स्थानों में लगी रहती हैं, वह बुरे भले दोनों को देखती रहती हैं (नीतिवचन 15:3)।

और सृष्टि की कोई वस्तु उससे छिपी नहीं है बरन जिससे हमें काम है, उसकी आंखों के साम्हने सब वस्तुएं खुली और बेपरद हैं (इब्रानियों 4:13)।

एक अवसर पर परमेश्वर से प्रार्थना करते हुए, प्रेरितों ने उसे सम्बोधित करते हुए कहा था कि “तू जो सब के मन जानता है” (प्रेरितों 1:24)। यीशु ने हमें यह आश्वासन दिया है कि हमारे सिर के बाल तक भी गिने हुए हैं और परमेश्वर को गिरने वाली प्रत्येक चिड़िया का ज्ञान होता है (मत्ती 10:29, 30)। उसने हमें इस तथ्य से भी आश्चस्त किया है कि “तुम्हारा पिता तुम्हारे मांगने से पहिले ही जानता है, कि तुम्हारी क्या आवश्यकता है” (मत्ती 6:8)। परमेश्वर के ज्ञान में सब बातें शामिल हैं और उनकी कोई सीमा नहीं है।

सर्वशक्तिशालिता

जब इब्राहीम निन्यानवे वर्ष का था, तो प्रभु ने उसे दर्शन देकर कहा था, “मैं सर्वशक्तिमान

ईश्वर हूँ” (उत्पत्ति 17:1)। इस नाम से परमेश्वर की शक्ति तथा सामर्थ का पता चलता है। इब्राहीम को एक वंश देने की प्रतिज्ञा करने और उस प्रतिज्ञा पर सारा के हंसने के बाद, परमेश्वर ने इब्राहीम से पूछा था: “क्या यहोवा के लिए कोई काम कठिन है?” (उत्पत्ति 18:14)। बाइबल के पन्नों पर तथा यीशु मसीह में देखकर परमेश्वर से मुलाकात करने वालों को दृढ़ता से इस प्रश्न का उत्तर देना चाहिए “नहीं!” परमेश्वर की सामर्थ उसके गुणों में स्पष्ट देखी जा सकती है। यीशु ने ऐलान किया था, “परमेश्वर से सब कुछ हो सकता है” (मत्ती 19:26)। स्वर्गदूत ने मरियम को दर्शन देकर सूचित किया था कि परमेश्वर ने उसे प्रभु की माता होने के लिए चुन लिया है, और कहा, “क्योंकि जो वचन परमेश्वर की ओर से होता है वह प्रभाव रहित नहीं होता” (लूका 1:37)।

आश्चर्यकर्मों से ही परमेश्वर की शक्तिशाली सामर्थ प्रमाणित हुई है। उसने आग से शद्रक, मेशक और अबेदनगो को हानि नहीं पहुंचाने दी। उसमें लाल सागर के पानी को दो भागों में बांट देने की, कुल्हाड़ी को चपटा करने की, तूफान को शांत करने की और पानी को स्वादिष्ट मय में बदलने की सामर्थ थी। शून्य से तत्व की सृष्टि उसकी असीमित शक्ति को दिखाती है। परमेश्वर के हाथ की कारीगरी तारों से भरे आकाश में दिखाई देती है; जो उसकी महिमा का वर्णन करते हैं। उसकी सामर्थ प्रकृति, इतिहास और मनुष्य के छुटकारे में देखी जाती है। ईश्वरीय सामर्थ का सबसे बड़ा प्रदर्शन यह था “जो उसने मसीह के विषय में किया, कि उस को मरे हुएों में से जिलाकर स्वर्गीय स्थानों में अपनी दहिनी ओर बैठाया” (इफिसियों 1:20)।

सर्वशक्तिशाली होने का परमेश्वर की सर्वव्यापकता और सर्वज्ञता से गहरा सम्बन्ध है। यह तथ्य कि वह हर जगह है, उसे सब कुछ जानने और हर जगह कार्य करने के योग्य बनाता है। परमेश्वर योग्य, सम्पन्न तथा हर काम करने में समर्थ है। वह सृष्टि का स्वामी होने के साथ-साथ सर्वशक्तिमान भी है, अर्थात् सृष्टि उसके नियन्त्रण में है। जो कुछ भी करने की आवश्यकता हो वह सब कुछ करने में समर्थ है। उसकी सामर्थ मानवीय इतिहास में किए उसके कार्यों से कहीं बढ़कर है। उसका स्वभाव तथा चरित्र जैसा भी करने के लिए कहे और उसकी सृष्टि जैसी भी मांग करे, वह सब प्रकार से कार्य करता है।

मानवीय भाषा में परमेश्वर का वर्णन

बाइबल के कुछ पद इस पाठ की बातों से थोड़े अलग लगते हैं। यदि परमेश्वर हर जगह है, तो धर्म शास्त्र में उसे आते या जाते क्यों कहा गया है, जैसे वह कोई मानवीय जीव हो? हमें बताया गया है कि वह बाग-ए-अदन में चलता था, वह बाबुल की मीनार बनने के समय नीचे उतरा था, उसने कई लोगों को दर्शन दिया, और वह कशबियों के बीच सिय्योन में निवास करता था। हम इन बातों की इन तथ्यों से व्याख्या कर सकते हैं कि, परमेश्वर स्थानीय परमेश्वर तो नहीं है, परन्तु दिखाई वह स्थानीय रूप से ही देता रहा है। फिर, हमें यह भी पता होना चाहिए कि स्थान से परमेश्वर के सम्बन्ध की बात बहुत ही सांकेतिक रूप में कही गई है। यह कहना कि परमेश्वर मनुष्य को प्रतिफल या दण्ड देने के

लिए दूर से आता है, ईश्वरीय कार्यों की व्याख्या के लिए मानवीय शब्दावली का इस्तेमाल करना है। विद्वान लोग ऐसी सांकेतिक अभिव्यक्तियों को “एन्थ्रोपोमोर्फिज्मस,” अर्थात् मानवीय शब्दों में मानवीय जीवों को परमेश्वर द्वारा अपने आपको प्रकट करना कहते हैं।

जिन पदों में परमेश्वर के शारीरिक अंग होने या मानवीय काम करने की बात कही गई है, उनमें भी यही बात सत्य है। उसका चेहरा, आंखें, नथुने, भुजाएं और पांव होने की बात कही गई है। उसके मीठी सुगन्ध लेने, हंसने, पछताने और अन्य देवताओं से ईर्ष्या करने की बात कही गई है। हमें चाहिए कि इन्हें अक्षरशः न समझें। परमेश्वर के किसी भी गुण या विशेषता को मनुष्य की ही भाषा में बताया जाना चाहिए ताकि वह उसे समझ सके और हमें चाहिए कि ऐसी अभिव्यक्तियों को हम सामंजस्य वाली भाषा के रूप में देखें। परन्तु, इन सांकेतिक शब्दों का अर्थ यह भी है कि ईश्वरीय व्यवहार में मानवीय गुणों और कार्य की कुछ समानता भी है, जिन पर ये बातें आधारित हैं। इन बातों को लिखने वालों ने अक्षरशः नहीं लिया। यदि वे इन्हें अक्षरशः लेते, तो वे यह मान रहे होते कि परमेश्वर के पंख हैं और वह एक पेड़ है जिसकी शाखाएं फैलती हैं, क्योंकि उन्होंने उसका चित्रण इन शब्दों में भी किया।

व्यावहारिक महत्त्व

परमेश्वर के असीमित होने से परमेश्वर की संतान को काफ़ी सांत्वना तथा संतुष्टि मिलती है। परमेश्वर हर जगह होने के कारण, मुझ में है और मेरे पास है। अपने समय के एक प्रसिद्ध नास्तिक एनथनी कोलिन्ज़ की मुलाकात एक सीधे-साधे गंवार से हो गई जो आराधना करने के लिए जा रहा था। “तुम चर्च क्यों जा रहे हो?” कोलिन्ज़ पूछने लगा। उत्तर मिला, “परमेश्वर की आराधना करने।” “जिस परमेश्वर की तुम आराधना करते हो वह बड़ा है या छोटा परमेश्वर?” कोलिन्ज़ ने मज़ाक में पूछा। उसे अनापेक्षित उत्तर मिला “श्रीमान जी, वह इतना बड़ा है, कि आकाशों के आकाश भी उसे अपने में समेट नहीं सकते, और इतना छोटा है कि वह मेरे हृदय में रह सकता है।” कोलिन्ज़ ने बाद में कहा कि उसके मन पर परमेश्वर के बारे में इस सरल परन्तु प्रभावशाली उत्तर ने प्रभु के विरोध में लिखी गई विद्वानों की बड़ी-बड़ी पुस्तकों से अधिक प्रभाव डाला।

परमेश्वर मेरे भीतर है! वह हर जगह मेरी सहायता करने और हर दुख और कष्ट से बचाने के लिए मेरे पास है। “... प्रभु निकट है। किसी भी बात की चिन्ता मत करो ...” (फिलिप्पियों 4:5,6)। हम हमेशा अपने पिता की नज़रों में रहते हैं; हम उसके साथ वास्तविक तथा व्यापक सहभागिता का आनन्द कहीं भी ले सकते हैं।

यदि हम परमेश्वर के निकट रह रहे हैं, तो उसका बड़ा ज्ञान हमारे लिए सांत्वना देने वाला है। वह सब को जानता है, मुझे और मेरी आवश्यकताओं को भी जानता है। वह मेरे बोझों, मेरी परीक्षाओं और मेरे कष्टों को भी जानता है। वह मेरे हंसने, मेरे रोने, मेरे दुखों और आनन्द को, मेरे कष्ट और मेरी प्रसन्नता को जानता है। वह मेरे मांगने से पहले ही जानता है कि मुझे किस चीज़ की आवश्यकता है।

परमेश्वर सर्वशक्तिशाली है, इसलिए वह मेरी सभी आवश्यकताओं को पूरा करने में सामर्थ्य है। वह सब कुछ कर सकता है और मेरी ओर से अपनी महान सामर्थ्य का इस्तेमाल करने को तैयार है। वह प्रार्थना का उत्तर देने के साथ-साथ हमें यह आश्वासन भी दे सकता है कि वह ऐसा ही करेगा। हमारा परमेश्वर “ऐसा सामर्थी है कि हमारी बिनती और समझ से कहीं अधिक काम कर सकता है, उस सामर्थ्य के अनुसार जो हम में कार्य करता है” (इफिसियों 3:20)।

परमेश्वर की असीमितता से कई लोगों को राहत मिलती है, जबकि कइयों को यह बात आतंकित करती है। परमेश्वर हर जगह है, सब कुछ जानता है, और उसके पास सारी सामर्थ्य होने की ऐसी महान सच्चाइयां हैं जिन्हें दुष्ट व्यक्ति किसी भी प्रकार मानना नहीं चाहता। युगों-युगों से, लोग परमेश्वर से भागने की कोशिश करते रहे हैं। भागने का हर प्रयास वैसे ही मूर्खता भरा है जैसे पहली बार आदम और हव्वा ने अदन में अपने आपको छुपाया था (उत्पत्ति 3:8)। परमेश्वर से दूर भागने की कोशिश वैसे ही व्यर्थ है जैसे योना के लिए परमेश्वर की उपस्थिति से दूर भागने की थी (योना 1:3)। आज बहुत से लोग यह नहीं मानेंगे कि वे परमेश्वर से दूर भागने की कोशिश कर रहे हैं, परन्तु उनके जीवनो के आचरण से स्पष्ट दिखाई देता है कि वे परमेश्वर से दूर भाग रहे हैं।

संदेह करके या परमेश्वर के अस्तित्व का इन्कार करके हम उससे भाग नहीं सकते। नास्तिकों के लिए खोज बहुत बड़ी बात है, और जब तक कोई बात गणित से प्रमाणित न हो जाए, वे उसको नहीं मानते हैं। एक नास्तिक कहता है, “मैं नहीं मानता कि परमेश्वर है भी या नहीं।” दूसरे लोग, व्यक्तिगत आनन्द हेतु खाने, पीने और भोगविलास में लगे रहने की फ़िलॉसफ़ी को मानते हैं। वे पूछते हैं, “यह जीवन तो एक ही बार मिला है, तो फिर यह सब क्यों न करें?” कुछ लोग जो ऐसा करते हैं वे नीच तथा गिरे हुए हैं; दूसरे लोग कानून का पालन करने वाले नागरिक तो हैं परन्तु दोनों ही परमेश्वर के बिना होने के कारण, अधर्मी हैं। हम में से ऐसे अधिकतर लोग न तो आस्तिक हैं और न ही धार्मिक। वे समाज के औसत लोग हैं जो कभी बाइबल नहीं पढ़ते, केवल किसी बड़े कष्ट के समय ही प्रार्थना करते हैं, और किसी बड़े अवसर पर ही आराधना में जाते हैं। वे प्रभु के दिन को केवल व्यक्तिगत आनन्द तथा मनोरंजन का दिन मानते हैं। आस्तिक लोग कहते तो हैं कि परमेश्वर है, परन्तु इनमें से अधिकतर लोगों का जीवन ऐसा है जैसे वे कह रहे हों कि परमेश्वर है ही नहीं। परमेश्वर से दूर भागने या उसकी उपेक्षा करने के मनुष्य के प्रयासों के बावजूद, *परमेश्वर तो है ही!*

सामान्य की तरह, संसार अव्यवस्थित है। हमारी समस्याएं, जिनका बहुत से बुद्धिमान लोग अंगीकार करते हैं कि वे उनका उत्तर नहीं दे सकते, प्रत्येक वर्ष बढ़ती ही जा रही हैं। फिर भी हमारी छोटी-छोटी लड़ाइयों तथा तुच्छ झगड़ों के होने पर भी *परमेश्वर तो है!*

भजन लिखने वाले ने एक बार अपनी परीक्षाओं से भागने का विचार किया।

... भला होता कि मेरे कबूतर के से पंख होते

तो मैं उड़ जाता और विश्राम पाता !
देखो, फिर तो मैं उड़ते-उड़ते दूर निकल जाता
और जंगल में बसेरा लेता
मैं प्रचण्ड बयार और आन्धी के झोंके से बचकर
किसी शरण स्थान में भाग जाता
(भजन संहिता 55:6-8) ।

निश्चय ही, यदि दाऊद को पंख दिए गए होते और वह जंगल में उड़ जाता, परन्तु वहां भी समस्याएं उसे घेरे रहती और परमेश्वर वहां भी होता । इसी दाऊद ने, भजन 139 लिखते हुए परमेश्वर की महिमा का मनन किया और उसकी असीम महानता का गीत ऐसे गाया कि सदियों बाद आज भी वह हमारे हृदय को छू लेता है ।

यह पाठ *अबिलेन क्रिश्चियन कॉलेज*
लैक्चर्ज़, 1958 से लेकर मुद्रित किया गया है ।
अबिलेन क्रिश्चियन यूनिवर्सिटी लैक्चरशिप
के निर्देशक की अनुमति से छापा गया ।